प्रांजलि

भाग -2

आध्यत्मिक प्राथनाओं का संग्रह

रचियेता

सुरेश चौधरी

प्रकाशक

शुक्तिका प्रकाशन

कोलकाता

ISBN :

प्रांजलि भाग-2

शुक्तिका प्रकाशन
स्वामित्व
ए & ए एनर्प्राइजेज
516/4 बी एल साहा रोड
कोलकाता 700038
ईमेल: editor@shuktika.com

प्रथम संस्करण 2015
द्वितीय संस्करण 2023

मूल्य: 150/-

सर्वाधिकार लेखकाधीन

मुद्रक:
मिश्का इन्फोटेक, कोलकाता

A BOOK BY SURESH CHOUDHARY INDU ON SPRITUAL PRAYERS PRANJLI PART -2

व्यक्तव्य -प्रथम संस्करण

प्रिय सुधिजन !

प्रांजलि के बाद मुझे ऐसा प्रतीत हुआ की प्राथनाएं तो कई हैं फिर प्रांजलि तक ही क्यूँ सीमित रहूँ, हमारे तो हर शास्त्र गूढ़ ज्ञान की मन्दाकिनी हैं, जितना गोता लगाओ उतना ही नूतन ज्ञान प्राप्त होता है। मुझे शास्त्रों के प्रत्येक सूत्र, श्लोक, मन्त्र से यह अनुभूति होती है कि यह श्लोक या मन्त्र कुछ कह रहा है, मुझे बता रहा है की परम पिता परमेश्वर ने शास्त्रों के हर सूक्त से कुछ मांगने का आदेश दिया है, बस जिज्ञाषा रहनी चाहिए, हमें सूक्तों को हल करना पड़ेगा तदपुरांत स्वतः प्राथना रुप स्वर स्फुटित हो उठेंगे । इसी प्रयास में स्वरांजलि आपके सम्मुख प्रस्तुत है, जिसमे निज विचार एवं अंतस की पुकार के साथ श्रीमद भागवत के कुछ श्लोकों एवं वेदों के कुछ श्लोकों से प्रभावित भाव लिए प्राथनाएं अंकित हैं ।

मैं कोई ज्ञानी तो नहीं, न ही संस्कृत का कोई आचार्य, मैं तो हिंदी की भी पहली कक्षा का विद्यार्थी हूँ , अतः चुक, गलतियाँ स्वाभाविक हैं आपसे अनुरोध है की इन गलतियों को उपेक्षित कर मुझे क्षमा प्रदान करें ।

प्रयत्न रहेगा शास्त्रों के उपदेशात्मक श्लोकों से प्रेरित एवं भावों पर आधारित प्रथानाओं का सिलसिला यूँ ही जारी रहेगा ।

आपका

सुरेश चौधरी

संवत २०७२,

आषाढ़ मास (पुरषोत्तम मास)

व्यक्तव्य -द्वितीय संस्करण

प्रिय पाठकगण

प्रथम संस्करण स्वरांजलि के नाम से प्रकाशित हुआ था , फिर कई वर्षों इसे पुनर्प्रकाशीत करने की आवश्यकता नहीं हुई। संयोग देखिए की पहला संस्करण पुरुषोत्तम मास आषाढ़ मे प्रकाशित हुआ था, और दूसरा संस्करण श्रावण के पुरषोत्तम मास मे हो रहा है । पुस्तक का नाम बदल कर प्रांजलि ही रख रहा हूँ ताकि भ्रम न रहे , आध्यात्मिक प्रार्थनाएं सभी अब से प्रांजलि के नाम से होंगी बस शृंखला बनी रहेगी अतः यह पुस्तक प्रांजलि शृंखला की दूसरी पुस्तक हुई।

2015 से आज तक मेरे लेखकीय जीवन मे बहुत परिवर्तन आए हैं और आपके आशीर्वाद से कुल 31 पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। आशा है मेरी अध्यात्म साधना इस प्रकार अनवरत चलती रहेगी। आपका आशीर्वाद मिलता रहे बस यही कामना है ।

मैं कोई ज्ञानी तो नहीं, न ही संस्कृत का कोई आचार्य, मैं तो हिंदी की भी पहली कक्षा का विद्यार्थी हूँ , अतः चुक, गलतियाँ स्वाभाविक हैं आपसे अनुरोध है की इन गलतियों को उपेक्षित कर मुझे क्षमा प्रदान करें ।

प्रयत्न रहेगा शास्त्रों के उपदेशात्मक श्लोकों से प्रेरित एवं भावों पर आधारित प्रथानाओं का सिलसिला यूँ ही जारी रहेगा ।

आपका

सुरेश चौधरी 'इंदु'

संवत 2080 , पुरषोत्तम मास एकादशी कृष्ण पक्ष

आप हो सर्व कारण

हे सर्वव्यापी भगवान !
आपका है ध्यान,
आप हो सर्व कारण
आप हो उत्पत्ति-पालन-संहारण
वैदिक ज्ञान के प्रदाता
प्रकट अन्तरंग शक्ति ही सत्य
भौतिक जग की वहिरंग शक्ति है अनित्य
सदृश मृग-मरीचिका
जल विहीन
पर जल का आभाष
जल तो प्रभु
अध्यात्म में प्रसादित्य ।
देव गण भी है पड़े
ब्रह्म-ज्ञान के मोह में,
प्रकृति के त्रिगुण
अवास्तविक है पर
वास्तविकता की छोह में
भौतिक जगत के
समस्त मोह रूप को मुक्त कर
परम धाम में दे स्थान
आपका करता हूँ ध्यान ।
(श्रीमद भागवतम के प्रथम श्लोक से प्रेरित)

रचना सृष्टि की

हे सृष्टि रचियेता !
सृष्टि का सृजन
प्रभु की अद्‌भुत रचना
अभिव्यक्ति सामर्थ्य चिंतन की
अभ्यंतर कवि की
अभ्यर्थना मानस रवि की,
अस्तित्व की सोच
अस्तित्व का मार्ग
सकारात्मक
कृति स्वयम की
कीर्ति कृति की
कृति नैसर्गिक सौम्य हो
उच्च आदर्श हो
सृष्टि का सृजन अमर हो
अमर हो ।

हे महादेव हमें शरण में लें ।।

हे शिव !
त्रिगुण मयी जगत ही बंधन रूप है,
आपके वंदन से ही
मनुज होते हैं गुणातीत
आपके वंदन से ही
त्रय ताप होते हैं भष्मित
अतः आप कहलाते त्रिपुरारी
सर्प आपके कंठ का
द्योतक अभिमान, क्रोध,
मोह आदि उत्कंठ का
आप इसे वरण कर, करें हमें मुक्त
आपका वाहन वृषभ धर्म से युक्त
आप नित्य धर्म पर आरूढ़ रहते हैं
जगत की अथार्थ विभूति सहते है,
अतः आप इसे सर्वदा तन से लगा कर
जग को अभिभूत करते हैं
सम्पूर्ण चराचर भूत आपके अधीन है
आप भूतनाथ हैं
आपके प्रत्येक अंग-प्रतंग स्वाधीन हैं
अध्यात्म दर्शाते हैं आप
हे महादेव हमें शरण में लें आप ।।

प्रकृति

हे नाथ !
सूर्य नमस्कार का समय हो चला है
तमस के दुःख को हर
प्रातः रश्मिया खिलखिला रही हैं,
हल्की सी गर्माहट ताजगी परोस रही है
उनींदा जागरूक हो चला है
दूर जमी दूब पर
ओस पिघल रही है
दूब की हर पत्ती के साथ
पास खड़े आम का पेड़
स्पर्धा करते हुए कह रहा है
कुछ स्थान हमें भी दो,
प्रकृति के इस आँचल में
मुक्त स्वच्छ साँसे लूँ
मानो आम एवं दूब के साथ
हम भी उग रहे हैं ,
अपनी जड़ों को खुद
गगन को चुमते हुए ढूंढ रहे हैं
नाथ हमें भी प्रकृति की गोद में
कुछ स्थान दो
हम भी प्रकृति को
आत्मसात करना चाहते हैं ।

जीवन यात्रा

हे नाथ !
प्रातः की स्वर लहरी
निनाद करते हुए
सौम्य हलचल मचाती है
अंतस के तामस गुण अंतर्मुखी होते है,
फिर भी
ज्ञान के स्वर
वहिर्मुखी आनंद को
उज्वलित करते हैं
इन स्वरों का समन्वय
जीवन यात्रा में
अपेक्षित अधोगुनों को
निपातित कर
मंगल प्रेम को
प्रतिस्थापित करती है
सदा ऐसा हो
यही कामना है ||

ज्ञान-यज्ञ पूर्ण हो

हे तपस्वी !
विद्या-ज्ञान से
जगत-रूपी महासागर के ध्यान से
मेरी बुद्धियों को प्रकाशित करा ।
मै होऊं प्रयत्न-शील
प्रेरित कर
यश वैभव को पाने के लिए ।
धरा-ज्ञान-वाणी बना सुखदायक
संगठित कर निज आत्म-शक्तियां ।
एकत्रित हो सारी सुमतियाँ ।
मेरी बुद्धि हो प्रेरित ज्ञान से
संसर्ग हो विद्वानों का ।
ज्ञान-यग्य पूर्ण हो ।
रहे जब तक सूर्य आलोकित
मेरी सिद्धि भी हो प्रकाशित ।

ओंकार प्रणव

हे प्राणदाता,
व्योम में व्याप्त शून्य की गंभीरता,
सागर की गहराई में समाई नीरवता,
धरा की सहनशीलता
समाहित करती,
ओंकार के त्रिगुणों से आभाषित कर,
ब्रह्म आत्म-चिंतन है,
विष्णु भौतिक संरक्षक
शिव कल्याणकारी मोक्ष प्रदाता,
तीनो का प्रतिरूप ओम्,
समग्र रूप से ओम्-मय कर,
ब्रह्म का वैश्वानर
सम्पूर्ण कामनाओं को
परिपूर्ण करता तैजस रूप
ओकार तु, संतति का उत्कर्ष,
ब्रह्म-ज्ञान का समर्पण
सब को सम्मानित करता उकार तु,
भुत-भविष्य-वर्तमान से मुक्त
आदि-अंत-अनादि से परे प्राप्य ब्रह्म मकार तु,
ओंकार निर्भय ब्रह्म पद,
मेरे चित को इस प्रणव में,
समाहित कर ।

तन शांति का अनुभव करे, मन शांति का अनुभव करे,

हे जग्स्वामी !
मस्तिस्क की विह्वल तरंगों में
शांत रस भर दें,
नयनों की अंजुली में
प्रेम-सुधा-रस पान कर दे,
वक्षस्थल में अनुपम शांति का निर्वहन हो,
द्वन्दातित बन अभितज्य बनूँ,
समग्र देह में शिरोत्पाद शांति का वरण हो,
तन शांति का अनुभव करे
मन शांति का अनुभव करे,

अंतर्मन के दर्पण में उद्विग्न छवि
शांत एवं शीतल हो,
स्वतः धीरे धीरे मन हो एकाग्रचित
निंद्रा रूप में प्रभु मन हो स्थित
हो आराध्य पुष्प सृजित
तन शांति का अनुभव करे
मन शांति का अनुभव करे,

आनंद यात्रा पर निकला यह मन
आनंद धाम ही है गंतव्य
मध्य की कलुषता का कर निवारण

हो मन सहज-शांत-आनंद्चित
तन शांति का अनुभव करे

क्षमता के दायरें होते जब सिमित,
होता है अंतस अशांत एवं तृश्चित
शब्द को बना प्रेरणा
सामर्थ्य हो असीमित
तन शांति का अनुभव करे
मन शांति का अनुभव करे,

भोर के उजाले का इंतज़ार है

हे परम गुरु !
अभी समय के झंझावातो में
सूर्योदय छिप गया है,
रात्री के समापन हो गया पर
लालिमा अनुपस्थित है,
रिश्ते ऐसे हो गए हैं,
जैसे मूर्तियाँ हो कांच की,
गुमसुम, उन्मन, एकांत,
दर्द और ह्रदय शांत
भोर के उजाले का इंतज़ार है,

हर व्यक्ति हवाओं में ही
व्यक्तव्य देने को आतुर है,
ह्रदय के आघात में औषधि लेपने की
नाकाम कोशिश करती
समय के अंतराल में,
भविष्य को ढूँढती
यह चाह
दूर और दूर जा रही है,
भोर के उजाले का इंतज़ार है ।

<u>विरक्त न मन तुझसे करना,</u>

हे कृपानिधान !
परीक्षाएं ले चाहे जितनी,
विरक्त न मन तुझसे करना,
हृदयपटल पर हो विराजित-,
त्यक्त स्वप्न पुरे तुझमे करना
आशाएं हो धूमिल तो क्या,
अनुरक्त नयन अश्रु से भरना|
हे प्रभो !
उचित कामना मेरी रहे,
अनुग्रहित कृपा तेरी रहे,
अश्रुपूरित नयन तेरी राह में हो
आग्रहित दया को तन तेरी बांह में हों,
परीक्षाएं ले चाहे जितनी,
विरक्त न मन तुझसे करना |
हे स्वामी !
पथ प्रशस्त कराते रहना,
दीप अभिलाषाओं के जलाते रहना,
काट अंध उर के
मन आलोकित कर
अनुभव प्रेम का दिलाते रहना,
परीक्षाएं ले चाहे जितनी,
विरक्त न मन तुझसे करना |

क्षितिज

हे स्वामी !
अब तो बता
कब क्षितिज पर
लालिमा का अंगार होगा
कब वसुंधरा पर
पोषित हरित शृंगार होगा
कब कम होगी अंतस की वेदना
मनुज को मनुज से प्यार होगा

घटायें काली छा रही हैं
मार्ग है दुर्गम
लौ दीपक की टिमटिमा रही हैं
भूलभुलैया में गुम
हृदय वर्जनाएं चरमरा रही हैं

आस लगाये बैठा हूँ
तर्पण को जलधार लिए बैठा हूँ
दूर करने अंतस पीड़ा
अंतस में समग्र संसार लिए बैठा हूँ
आ भी जाओ पूरी करो कामना
मनुज बना मुझे
मनुज के काम लाओ ।

त्रिगुण

हे नाथ !
त्रिगुण प्रकृति के संवाहक हैं, विचारक हैं,
आप हो त्रिगुनातित
आप हो गुणों के संचालक,
संरक्षक
इनके संयोजन एवं नियमन से ही सृष्टि मानक है,
प्रभावी गुण ही रचता विचार निमेष
विचार ही होते जीवन में लक्ष्य विशेष
लक्ष्य निर्धारण कर लें
जीवन में गुण उतार
चयन हो मार्ग,
मनन हो निज व्यवहार
त्रिगुणों के प्रभाव से तापत्रय भी होते प्रभावित
सतोगुण ही सर्वदा हितवर्धक परिचालित
अहैतुकी कृपा रहे सदा साथ
आशीष दें त्रिगुण का समन्वय रहे नाथ ||

मन के अश्व तो बहुत चंचल हैं

हे नाथ !
आपके कमल नयन
मेरे हृदय को
अथाह शांति प्रदान करते हैं
मन के अश्व तो बहुत चंचल हैं
बहुत अशांत है,
विद्युत् गति से तीव्र ये
संसार के
मोह वन में भटक रहें हैं
त्रितापों से मुक्त होना है,
तप-त्याग के अंकुश से,
इन अश्वों को नियंत्रण में लेना है,
आपके राजीव-लोचन
मेरे नियामक हैं,
इन नेत्रों का
मनोहारी दर्शन
चित्त शांत करता है,
मन के अश्व
संयम में रहते हैं,
इन नेत्र-दृष्टी से
सदा कृपया बनाये रखें ।

पाषाण

हे नाथ !
आप सर्वत्र हैं, आप सर्वदा हैं, आप समरूप हैं,
आप अजन्मा हैं, आप प्रकट हैं, आप अप्रकट हैं
आप ज्योति पुंज सर्विदित स्वरुप हैं,
फिर क्यूँ मैं पूजता
इन पाषाण की मूर्तियों को,
क्या इस लिए की ये आस्था की प्रतिक हैं,
या देव आप इसमें विराजित हैं ?
नही मैं पूजता इसलिए की
ये पाषाण जानते हैं
इन्होने सहा है
दर्द अपने ही लोगों से
हथौडो की चोट खाने का ,
छेनी से तराशे जाने का,
ये पूजनीय हैं ।
नाथ आप हैं सर्वशक्तिमान,
दींन ,दुखियों, के तारनहार
आप करुना निधान
मुझे पाषाण बनाओ तो पूजनीय बनाना
मैं भी लोगो की वेदना
आत्मसात करना चाहता हूँ ।।

सृष्टा

हे ईश !
हे वासुदेव ।
आप हो सृष्टा इस विराट जग के,
रहते परमात्मा रूप में हृदय मध्य सब के,
प्रभु सूक्ष्मतम से भी सूक्ष्मतम होते हुए भी,
ब्रुहतम से बृहतर हो आप,
सर्व-व्यापक परमेश्वर हो आप,
आप परम शांत हो,
आप निष्णांत हो,
करते कुछ भी नही
फिर भी सब कुछ होता है,
आपका सर्व व्यापक स्वभाव
ऐश्वर्य पूर्ण है,
गोविन्द आपको नमन है,
नमन है ।।

हे अनुपम तेजोमयी जगद्माता

हे अनुपम तेजोमयी जगद्माता
आभाषित तेज मुझे कर प्रदान
आद्य शक्ति का मुझे हो भान
निरख आप के मुख मंडल को रहूँ सदा प्रफुल्लित
कोमल केशों में समाहित सुरुभी से कर मुझे सुरभित
कोमलता पा आपकी मैं भी बनूँ कोमल
ललाट पर विराजित देदीप्य-मान प्रभास दे माँ,
ज्ञानोदय मेरे मस्तिस्क में हो आभास दे माँ।

राजीव-लोचन आपके कर रहे ज्योत प्रवाहित
यह पावन ज्योत मुझे में हो प्रवेशित
मेरे चक्षु भी विनय-अनय की जान सके भिन्नता
ज्वलित तेजोमय प्रकाश की हो तीव्रता।
आपके वक्षस्थल में शोभित जो करुणा है
दे दें मुझे माँ, करुण बन दीन-सेवक होऊं।
आपकी जो दसों भुजाएं हैं अस्त्र-शस्त्र से शोभित
दसों दिशाओं से आ रही विपत्ति का अग्रिम भान कराएँ
नष्ट कर विपत्तियों को शरण आपकी होऊं।
माँ आपके केहरी के गर्जन से भयभीत हुआ जा रहा,
मुझे शक्ति दे, मै सब कुत्षित विचारों से लड़ सकूँ।
आपके अवर्णनीय चरणों में स्थान दे,
वंदना क्षण प्रति क्षण आपकी कर सकूँ।

महा प्रयाण का समय आ गया है

हे कृपानिधान !
स्वस्ति उच्चारण के स्वर समुज्ज्वल
शंखनाद का जयघोष गुंजायमान है,
घंटियों की मधुर टंकार
धुप सुरभि से मिश्रित हो
आपका आह्वाहन कर रही हैं,
महा प्रयाण का समय आ गया है,
आज परम शांति का अनुभव है,
दिशा ज्ञान आलोकित हो
पथ प्रदर्शक हो चूका है
साधना की सुखानुभूति,
चरमोत्कर्ष पर विराजित हो चुकी है,
अभिलाषाएं, कामनाएं, भावनाएं,
एक अक्षंत सागर में समाहित हो कर
तिरोहित हो चुकी हैं,
अब तो प्रभु
श्वेत कपोत
व्योम शिखर पर
सज्जित तृष्णा का अहंकार रूप छोड़
निष्पादित विहार कर रहे हैं
मधुर मिलन की बेला है
आ प्रभु आलिंगन में ले लो ||

कर्मकांड

हे गुणनिधान !
ये कैसे रीति रिवाज
ये परम्परायें ये कर्मकांड ये पाखंड
सब कुछ बुझे बुझे से
मुझे व्यथित कर रहे हैं
आपकी तेजोमयी प्रभा से,
कृपा कर प्रभु ,
झंझा सम कर्तव्य साधना
मेरे अंतस में आत्मसात है ,
आपकी मुखारविंद से प्रवाहित,
ज्ञान-गंगा रूपी
हर साधना नयी दिशा पर दृष्टिपात है |

त्रिगुणों से रचित मानव शरीर,
कलुषता, छिन्नता,भिन्नता,
से परिभाषित,
आ प्रभु इसे संवार कर
नियोजित कर,
शुद्ध भक्ति से इसे प्रकाशित कर
इन आडम्बरों से भरपूर
रीति रिवाजों को तिरोहित कर
मेरे अंतर्मन को आलोकित कर |

दिवस का अवसान हो चूका हो

हे जगस्वामी !
यदि दिवस का अवसान हो चूका हो,
यदि खगों ने गान बंद कर दिया हो,
यदि शीतल बयार चल-चल थक गयी हो,
तब अन्धकार का यह पटल
डाल देना मेरी इस देह पर,
ठीक वैसे ही जैसे तुने
धरा ढकी है निंद्रा की चादर से
शतदल की पंखुड़ियों को
बंद कर दिया है आदर से

पथिक की सामग्री समाप्त हो चुकी
यात्रारंभ से पूर्व ही,
वस्त्र फटे हैं शक्तिहीन पथिक की
लाज एवं दरिद्रता दूर करो नाथ,
ठीक उसी तरह
जैसे आपने अनेक पुष्प खिलाएं है
रात्रि की छाव में
एक नव-जीवन दो प्रभु ।
(गीतांजलि की कविता एकटा दिन औरो चोले गेछे पर
आधारित)

एक दीप जला अंतस में

हे नाथ!
एक दीप जला अंतस में
दीप जो प्रदान करे एक उष्ण उर्जा
एक तीव्र चाह
कुछ करने की
अंतस के तिमिर को दूर कर
आलोकित करे
मस्तिष्क की शिराएँ

अषाढ़ के गहन वारिद
रात्री से शांत
मोहित करते
मनःस्थिति को रोमांचित करते
विचर रहे हैं

पुरवैया की सनसनाहट
और एक यवनिका अम्बुधर की
प्रातः के
चक्षु पटल बंद कर
नित्य जागृत नील गगन
को ढक
अंतस को जागृत

करती है

द्रोह, कलुष, अवगुण
के तिमिर को
आत्मसात कर
दीप प्रजवलित
करती
ये मेघ माला
चपला की चलायमान
प्रभा से
प्रभावान, दीप्तिमान करे
यही प्राथना प्रभु ।।

सम्बन्ध

हे नाथ !
जीवन पथ पर निकल पड़ा हूँ,
संबंधों की गरिमा एवं गूढ़ता
मात्र सम्बन्ध होने से तो नही होती,
प्रियता संबंधों में तो आत्मीयता का रूपक है,
मिथ्या सम्बंध आधार अवलम्ब हीन से होते हैं,
दृढ़ता और संबंधों को निभाने के लिए
एक समुचित अवलंब चाहिए
ज्युं प्रभु आपने आधार दिया
भरत को पादुका देकर
चौदह वर्षों का अनुशाषित साम्राज्य
निर्वहन किया पादुका के सहारे,
बृज की कुञ्ज गलिन में
प्रभु आपकी वेणु के स्वर
आपकी प्रिय चितवन
आपकी चरण रज
अवलंबन थी पूर्ण जीवन बिताने को
गोपियाँ आजीवन आधार पा चुकी थी
नाथ
इस डोलते बालक को भी आधार दो
जी सकूँ जीवन अपना
ले नाम आपका ||

प्रभु समस्त संताप हरो

हे योगेश्वेर !
त्रय तापों से मुक्त होने को
कोटिशः मनुष्य करते प्रयत्न
कृपा करते आप उन पर ही
जो आप के भक्ति-योग का संवरण करते
धर्म के चार स्तम्भ सत्य-तप-दया-दान
इन पर चल कर भव-सागर से होता निदान
राग-द्वेष-क्लेश-कपट आदि से निवारण हो
आपके चरण-कमलों से तारण हो

तप-अर्थ-काम-मौक्ष
चार चरण कर्मयोग के
जीवन घुमता इस वृत में
निष्काम कर्म ही उपासना
निष्काम कर्म में नही होती कोई कामना

अज्ञान के सुमेरु को
ज्ञान योग से विध्वंश करो
हे प्रभु समस्त संताप हरो ।

त्रिवर्गीय सन्तुलन

हे प्रभु !
धर्म-अर्थ-काम
वेदानुसार त्रीवर्गीय आयाम
शिक्षा,
आत्म साक्षात्कार,
भौतिक कर्मकांड
विधि व्यवस्था
विज्ञान और जीविका अर्जन के साधन
सभी साधनों को
आपके चरण कमलों में समर्पित है
धीर तथा दक्ष पुरुष
करते आत्मा का अनुसंधानिक विश्लेषण
शुद्ध मन से
पालन तथा संहारक समस्त वस्तुयें
आत्मा से सम्भंधित एवं अंतर रूप है
प्रभु जीवन को
त्रिवर्गीय सन्तुलन में बनायें रखें ।

अंतस में तो गहन अंध है

हे शांतिदूत !
मेरे मन की सुई तो मेरे आँगन में ही खोई है,
मै क्यूँ उसे बाहर ढूंढ रहा
अंतस में तो गहन अंध है,
मेरे अन्दर ब्रह्म ज्योत जलाएं प्रभु
मै अपने अन्दर की शान्ति
अपने अन्दर ही ढूँढना चाहता हूँ,
मोह, लोभ,
अहंकार से जडित यह देह
अति कष्ट कारी है,
इस दुर्गुणों के वृक्ष को तो
जड़ से ही काटना होगा,
जल सिंचन से क्यूँ दूषित कर रहा हूँ,
प्रभु गुरु रूपी कटार दें,
इन बुराइयों को
समूल नष्ट करना चाहता हूँ ।

जीवन पथ

हे सर्वेश्वर !
पर्वतारोहण की दुर्गमता लिए है
जीवन पथ,
सांसारिक परिदृश्य
सदृश चक्रीय मार्ग,
विवशता
पारिवारिक अनुराग,
पगडंडियों के गहरे गड्ढे
शूल एवं धुल
और
क्षितिज की मृगमरीचिका,
तत्पर
दे धैर्य साहस
चलें अग्रसर,
मनोबल आत्मसात कर,
जीवन पथ सुगम हो,
चिंतन मनन हो,
लक्ष्य हों स्पष्ट
दूर हों समस्त कष्ट,
आशीर्वाद दें प्रभु
निर्बाध मार्ग तय करूँ,
जीवन अगाध प्रेम मय करूँ ।।

मै क्षणिक विमुख तो हुआ

हे स्वामी !
आच्छादित
घने मेघों में छिपे,
तारागणों का अन्तर्निहित प्रकाश,
अस्तित्व विहीन नही होता,
भ्रम-वश मै क्षणिक विमुख तो हुआ,
परन्तु नाथ,
इस अंतर्मुखी तेजोमयी स्वरुप
की आभा से कभी दूर नही हुआ ।

पुष्पों में समाहित सुगंध की भांति,
आप दृष्टिमान तो नही,
परन्तु प्रत्येक स्थान पर विद्यमान हैं,
आपकी यह दया रूपी सुगंध
मुझे सुरभित करती रहे,

आपकी कल्याणकारी दृष्टि
अवचेतन शरीर को चेतन कर देती है,
स्पंदित अंतस,
प्रेमानुराग से ग्रसित विव्हल
तुम्हारे दृष्टिपात को आतुर है,
मुझे अनुग्रहित करें ।

हृदय की घोर जड़ता पर प्रहार करिए

हृदय की घोर जड़ता पर प्रहार करिए
मन की चंचल कल्मषता पर वार करिए

न जाने क्यूँ और कब
अज्ञान के गहन सागर में डूब गया हूँ
मुझे शक्ति दीजिये
मेरा प्रयास सफल हो जाए
मै अपनी घुटन और व्यथा से उबर जाऊं

मुझे आशीर्वाद दीजिये
मै समर्थ हो जाऊं
नित्य की तुच्छ एवं दैहिक वस्तुओं से
मेरा मन विचलित न हो,

मै इतनी शक्ति अर्जित करूँ
अपनी शक्ति को तुम्हारी प्रेमानुभूति
मनो-शक्ति में समावेशित करूँ ।

शरीर रूपी रथ

हे नाथ !
शरीर के रथ को तो
इन्द्रिय रूपी घोड़े ही खींचते हैं,
दौड़ते रहते है
वर्षों तक बिना किसी अवरोध के
बिना लक्ष्य प्राप्ति के
और थक जाते हैं,
पाप एवं पुण्य के दो पहियोंपर चली रथ
त्रिगुणों की ध्वजों से सजी रथ,
पंच तत्व से सृजित रथ,
मन की रस्सी से खिंची रथ,
बुद्धि रूपी सारथी ने चलाई रथ,
हर्ष -पीड़ा की धुरी पर घुमती रथ,
पांचो कर्मेन्द्रिया गतियां हैं
ग्यारहों इन्द्रियां सैनिक हैं
प्रभु सारथी बन इस रथ को पार लगाओ।
इन्द्रिय सुख में मग्न रथ पर आसीन जीव
झूटी अभिलाषा में इतरा रहा
जन्म जन्मांतर तक सुख के पीछे दौड रहा
प्रभु सारथी बन इस रथ को पार लगाओ।
(भागवत ४.२९.१८-२०)

आपके चरण-कमल के दर्शन करूँ

हे विश्वात्मा !
चकित हूँ
आप न करते हुए भी सब कुछ करते हैं
आप अजन्मा होकर भी
बार बार जन कल्याण के लिए जन्म लेते हैं
आप पशुओं,जलचरों,मनुष्यों,ऋषियों में
मन चाहे रूप में प्रकट होते हैं,
साक्षात् काल भी आपसे भयभीत
फिर भी बाल लीला कर लीलाधर बने
आप शाश्वत-नियंता-अदि अंत रहित
सम दर्शी-सम भाव रखते हैं
निरंतर श्रवण-पूजन-मनन-चिंतन करूँ
आपके दिव्य कार्य कलापों को
आपके चरण-कमल के दर्शन करूँ
ऐसी मुझे अनुभूति दीजिये

(१.८.२९-३६
श्रीमद भागवतम)

दिव्य प्रेमाभक्ति

हे परमात्मा !
मन कर्म वाणी से
दिव्य प्रेमाभक्ति के लिए
इस देह का वरण किया है
भोतिक एवं लौकिक स्थितियों में
जन्म हुआ है तो
विचरण करना ही पड़ेगा
परन्तु
भौतिक शक्ति-मेघा
अथवा वैराग्य से प्रभाव हीन हूँ
इस इहलोक की समस्त दुरावस्था के
आघातों से मुक्त करें प्रभु
उन्मुक्त पंक्षी सा
गगन चुमुं ।
श्रीमद भागवत
3.४.39

<u>अज्ञानी देह</u>

हे नाथ !
हमारा इन्द्रिय बल और मनोबल
शरीर बल,प्राण,अमरता,मृत्यु,
सब है अधीन आपके,
अज्ञानी देह ही सर्वकारण है,
ज्यों काठ की पुतली
ज्यों घास-फूस के खिलौने
नही नाच सकते अपने आप
हम भी नही कुछ कर सकते
आप की आज्ञा बिना
हम स्वतंत्र नही पर
आप के बस में हैं
आप हमें इस नाच और
खेल से मुक्त करें
आप अपने आधीन लें
मुझे समस्त वेदनाओं से
मुक्त करें ।

श्रीमद भागवत
६.१२.९-१०

जीवन धारा

हे नाथ !
वेगवान प्रवाहित तरंगे
कोई शाश्वत प्रमाण नही छोड़ती
अपने साथ लाई बालुका राशि का,
निरंतर प्रवाहित जीवन धारा भी
अंत में कोई पहचान नही छोड़ती
सुख-दुःख, स्वर्ग-नरक, अभिशाप-अनुग्रह का

प्रभु आप तो एक है,
बिना किसी द्वेष के
प्रभावित हुए बिना ही
आत्म-स्वरुप शक्ति द्वारा
सृजन करतें है समस्त सृष्टि का,

माया से दूषित
अविद्या एवं अज्ञान से परिपूर्ण
अनेक बन्धनों में जडित
सत्व - रजो गुणों से सिंचित
सुख-दुःख के अनुभव को दूर करो नाथ !
श्रीमद भागवत
(६.१७.२०-२१)

त्रय-गुणों के परम नियंता हैं आप

हे इश्वर I
मै आपको नमन करता हूँ
अपने इस सृष्टि कि रचना की
इस ब्रह्माण्ड में आप ही इश्वर रूप में विराजमान हो
प्रकृति के गुण-त्रय को बनाया क्रियमाण
स्वप्न देखने वाला
ज्यूँ स्वप्न में कर्म करता है
आप भी वैसे ही प्रत्यक्ष
सृष्टा हैं
त्रय-गुणों के परम नियंता हैं आप
पृथक रह कर भी आप
शुद्ध तथा अद्वितीय हैं
आप परम गुरु हैं
परब्रह्म के अदि साकार रूप भी हैं आप
मै कैसे किसी भौतिक वर की याचना करूँ
आप स्नेह एवं भक्ति भाव बनाये रखें II

अग्नि के विस्फुरित अंगारे

हे भगवन !
अग्नि के विस्फुरित अंगारे
समग्र चेतस से भी नही पा सकते
सूर्य का प्रकाशवान तेज,
हम भी आपको समझ पाने में असमर्थ हैं प्रभु,
आप तो पूर्ण ब्रह्म हैं, सर्व ज्ञाता हैं,
आप जग के आदि कारण और जग-पालक हैं,
आप संहर्ता हैं, सृष्टि के नियामक हैं,
आप दिव्य शक्तियों के लीलाधर हैं
जिवात्मों में विद्दमान
अंतःकरण में ब्रह्म हैं
वह्यतः में सृष्टि के अवयव हैं,
आप बहुमुखी होते हुए भी अंतर्मुखी हैं,
आप मूल तत्व होकर भी
सम्पूर्ण जग-गतिविधियों के साक्षी हैं
आकाश की भांति सर्व-गत होकर भी स्पर्श्य नही हैं
आप से कुछ भी नही छिपा,

हे सर्व-ज्ञाता,
आप जानते हैं
हम क्यों है आपकी शरण,
आपके चरण कमल की छाया

समस्त भौतिक अशांतियों से दूर करती हुई
सुख का अनुभव करती हैं,
आप परम गुरु हैं,
कृपया हमारे दुखों का हरण कर
हमें आश्रय दीजिये,
भौतिक जगत के समस्त संतापों को शमित कर
हमें चरण कमल में शरण दीजिये।

श्रीमद भागवत
(६.९.४२-४३)

अध्यात्म ज्ञान की चाह में,

हे नाथ !
अध्यात्म ज्ञान की चाह में,
जीवन उन्नत करने की राह में,
इन्द्रियतुष्टि के
चक्र से मुक्त करा
कृपा करें प्रभु
आपकी महिमा का अमृत पान हो
भौतिक तुष्टि पर विजय प्राप्त हो
अहिंसा ही मूल मन्त्र हो मुझमे
निरिहिया प्राणांत हों,
विपरीत परिस्थितियों में भी
विचलित न होऊं
मन ऐसा कुछ शांत हो
सांसारिक क्षुब्दता से
कभी न क्लांत हो ।

श्रीमद भागवत
४-२३-39

अहैतुक ज्ञान और वैराग्य हो

हे नाथ !
ले आप शरण
अहैतुक ज्ञान और वैराग्य हो
व्यर्थ श्रम है वृतियां
जो न कर सके
आपके दिए ज्ञान में उत्पन्न आकर्षण।
न चाहिए भौतिक लाभ भी
न चाहिए इन्द्रिय तृप्ति का साथ भी
हो मेरी वृतीय निश्चित
मात्र मोक्ष मुक्ति की आशा
जीवन की कामना में न हो
लालसा और भोग अभिलाषा
कामना हो परम सत्य की जिज्ञाषा।

न अब कोई लक्ष्य
आप ही हो सत्य
अद्वेत और तत्ववेत्ता
एकाग्रचित हो मनन-श्रवन-चिंतन
इसी उद्देश्य से हो तेरा पूजन
ले आप बन रक्षक अपनी शरण।

श्रीमद भागवत (१.२.७-१४)

आप अविचल हैं

हे ज्ञानेश्वर !
आप अविचल हैं,
आप पूर्ण-व्रतधारी हैं,
आप निर्विवाद सर्वश्रेष्ट निर्णायक हैं,
सृजन -पालन-संहार
तीनो अवस्थाओं में
आप परम सत्य हैं,
सृष्टि के समस्त अवयव में मात्र सत्य आप हैं,
बाकि सब मिथ्या है,
आप अन्तर्यामी हैं,
समभाव रख
प्रकृति का संतुलन बनाये रखते हैं
आपको साभार नमस्कार
मेरे अंतस में भी संभव रख
आप हमारी रक्षा करें ।

(श्रीमद भागवत १०.२.२७)

आपके कर कमल आशीर्वादों के श्रोत हैं

हे अच्युत !
आपके कर कमल आशीर्वादों के श्रोत हैं,
मै उनको नमन पूजन करता हूँ,
दया कर आपके कृपा-हस्त मुझ पर रखें
अपने चरण कमलों में स्थान दें प्रभु
आप ही दया-वत्सल हैं,
आप ही निःसंदेह सर्व समर्थ हैं,
आपकी माया कौन समझ सकता है,
मुझ पर माया से परे कृपा बनायें रखें

जिस प्रकार नट
कठपुतलियों को वश में कर नचाता है
उसी तरह आप
समस्त ब्रह्माण्ड को वश में कर नचाते हैं
जन-जन के हृदय में साक्षी-भव रख
निवास करने वाले प्रभु
मुझ नासमझ को वैदिक ज्ञान दो
वैदिक मन्त्रों की स्वर-लहरियां दे
मुझ पर उपकार करो प्रभु ।

श्रीमद भागवत
५.१८.२६.

आपने निंद्रा पर विजय पाकर

हे गुडाकेश !
आपने निंद्रा पर विजय पाकर
हमें अनुग्रहित किया,
निंद्रा तो अजगर के तुल्य है,
जीवन-वन में विचरण करने वाले
प्रत्येक जीवको
यह अजगर निगल लेता है,
और
जीव अज्ञान के अन्धकार में डूब जाता है,
सुदूर वन में
मृत देह की भाँती डाल दिया जाता है
इर्ष्या का सर्प-दंश चिंताकुल कर देता है
चिंताकुल व्यक्ति
अनिंद्रासे ग्रसित हो जाता है
ज्ञान एवं चेतना खो देता है
सदा दुखी रहता है
अंध व्यक्ति की भांति माया के कूप में गिर जाता है
प्रभु मुझे इस जीवन-वन से बाहर निकाल
मुझे ज्ञान दे ।.....
श्रीमद भागवत
।५.१४.२०-२१।

इस शरीर रूपी वृक्ष में

हे योगेश्वर !
इस शरीर रूपी वृक्ष में
सुख-दुःख के दो फलों की उपज होती है,
त्रिगुणों की तीन प्रकार की जड़ें हैं
धर्म-अर्थ-काम-मौक्ष
ये शरीर रूपी वृक्ष के मुख्य आधार हैं
शोक-मोह-जरा-मृत्यु-भूख-प्यास
पंच ज्ञानेन्द्रियों की अनुभूतियाँ हैं,
त्वचा-रक्त-पेशियाँ-वशा-अस्थि-मंजा-वीर्य
सात परतो से इस की छाल बनी है
पांच स्थूल एवं तीन सूक्ष्म तत्व शाखाएं हैं
नौ छिद्र है, दस पत्तियां हैं
दो खग -आत्मा एवं परमात्मा के विराजित हैं
इस वृक्ष के सृष्टा नमन तुझे
आप इस वृक्ष की रक्षा करें।

(श्रीमद भागवत १०-२-२८)

<u>आत्म -साक्षात्कार का अनुभव करा,</u>

हे नाथ !
ज्यूँ मेघ एवं रज कण
वायु के वेग से उड़े चले जाते हैं,
अल्पग्य इस कारण को ना जानते हुए
गगन मेघाच्छन्न कहते है,
वायु को मलिन कहते हैं,
आत्मा भी स्वतः
भौतिक शारीर में आरोपित है
मै अल्पग्य ऐसा मानाने लगा हूँ,
स्थूल धरना से परे सूक्ष्म धरना
जो निराकार है,अव्यक्त है, उन्देखी है,
जन्म बंधन से मुक्त है,
उसका ज्ञान करा,
आत्म-साक्षात्कार को अनुभूत करा
स्थूल तथा सूक्ष्म का भेद बता
आपको समर्पित कर सकूँ ये जीवन |

(श्रीमद भागवतम ९.3.3९-33)

एक नासमझ मनुज हूँ

दीवार के छिद्र से
प्रकाश के साथ आते धुल कण स्पष्ट होते हैं
उसी तरह प्रभु के असंख्य रोम कणों से
असंख्य ब्रह्माण्ड प्रकट होते हैं
मै सात बालिश्त का मानव
एक छुद्र प्राणी
समग्र भौतिक शक्ति
मिथ्या दंभ
से पोषित
एक नासमझ मनुज हूँ
आप तो माता तुल्य हैं
जो माता
पुत्र के हर उस दोष को क्षमा कर देती है
जो उसने अज्ञान में किये हैं,
आप प्रत्येक देह्दारी जीवात्मा एवं
समस्त लोकों के शाश्वत साक्षी हैं
आप नारायण हैं
आप की इस माया से परे ले चलें प्रभु ।

श्रीमद भागवत
(१०.१४.११-१४)

कर्म की शिर्शावास्था में पहुंचा प्रभु

हे प्रभु !
नष्ट कर
रजोगुण -तमोगुण के प्रभाव को
लुप्त कर
काम-इच्छा-क्रोध के स्वभाव को
कर मुझे स्थिर सतोगुण में
अब मै वैज्ञानिक ज्ञान
आपसे प्राप्त करना चाहता हूँ
शुद्ध सत्व में स्थिर हो
समस्त भौतिक संगति से
मुक्त होना चाहता हूँ
तोड़ हृदय की गाँठ
निज स्वरुप देखना चाहता हूँ
कर्म की शिर्शावास्था में पहुंचा प्रभु ।

श्रीमद भागवत
(१.२.१९-२४)

जन्म मनुष्य का पाया है,

हे मेरे प्रभु !
जन्म मनुष्य का पाया है,
व्याकुल तो होना ही होगा
लौकिक चिंताओं से,
भयभीत तो सदा रहना ही होगा
धन-देह-दैहिक संबंधों की
रक्षा के प्रयत्न में,
दुःख-शोक से
अभिभूत भी रहना होगा
शोक-अवैध कामना-
परिकर समूह के चिंतन में,
तृष्णा से प्रेरित अपने उद्दम में,
क्षण- भंगुर अवधारानाओं को
करना होगा स्थापित.
प्रभु आपके सुरक्षित चरण-कमलों में शरण देवें
इन चिंता एवं उलझनों से मुक्त होऊं ।

श्रीमद भागवतम
३.९.८

दिव्य आपके कार्यकलाप

हे प्रभु !
दिव्य आपके कार्यकलाप
अदभुत-अचिन्त्य हैं आप
मनीषी-गुणी भी न समझ सके इन कार्यकलापों को
मै तो हूँ निरा मूढ़
आप अनेकों में हैं
फिर भी हैं एक,
त्रिगुणों-विस्तार के निर्देशन हेतु
अकेले ही धरते रूप अनेक,
आप वेदों के-अध्यात्म के अधिष्ठाता
आप भक्त-हृदय के प्राण-दाता,

हे इन्द्रियों के स्वामी
आपको नमस्कार
भक्त के समस्त कष्टों को निरस्त करने वाले
आपको नमन बार बार
असुरी-नास्तिक प्रवृति को विनष्ट करने वाले
सर्वोच्च सिद्ध योगी को
नमन कोटिशः नमस्कार ।

श्रीमद भागवतम
२.४.१०-१४

दिव्य कार्य हो मुझसे

हे भगवान !
प्रवृति होती भोग की सभी में
धर्म के नाम पर जो करते ऐसा
घृणित -अनुचित होता वैसा
मुझे दे सात्विक धार्मिक प्रवृति ।
आप हैं असीम
मुझे बना भागी की मै ले सकूँ
यह अध्यात्मिक ज्ञान
मुझे भौतिक सुख के कार्य कलापों से कर विरक्त
मुझे कर स्थिर
दिव्य अनुभूति करा
दिव्य कार्य हो मुझसे ।
मुझे बना बुद्धिवान-कोविद
ब्रह्म लोक से पाताल लोक में भी जो सुख प्राप्त नही
उसे कार्यकाल में स्वतः मुझे प्राप्त करा ।

श्रीमद भगवत
१.५.१५-१९

धर्म-अर्थ-काम-मौक्ष

हे योगेश्वर !
इस शरीर रूपी वृक्ष में
सुख-दुःख के दो फलों की उपज होती है,
त्रिगुणों की तीन प्रकार की जड़ें हैं
धर्म-अर्थ-काम-मौक्ष
ये शरीर रूपी वृक्ष के मुख्य आधार हैं
शोक-मोह-जरा-मृत्यु-भूख-प्यास
पंच ज्ञानेन्द्रियों की अनुभूतियाँ हैं,
त्वचा-रक्त-पेशियाँ-वशा-अस्थि-मंजा-वीर्य
सात परतो से इस की छाल बनी है
पांच स्थूल एवं तीन सूक्ष्म तत्व शाखाएं हैं
नौ छिद्र है, दस पत्तियां हैं
दो खग -आत्मा एवं परमात्मा के विराजित हैं
इस वृक्ष के सृष्टा नमन तुझे
आप इस वृक्ष की रक्षा करें

(श्रीमद भागवत १०-२-२८)

भवन

हे जन्मदाता !
आपने यह शरीर
एक सुन्दरतम -विशाल भवन की भांति बनाया,
पांच उद्यान एवं पांच बाजार भी बनाये,
आने जाने को नौ द्वार भी बनाये,
तीन खंड में बंटा भवन
छः परिवारों को बसाता है,
पांच तत्व भी बनाये
और बनाया एक रक्षक
और एक गृह स्वामिनी
स्त्री सुख छोड़ जाने में कष्ट तो होता ही है स्वामी
अब तो रक्षक भी जाने को आतुर है,
इस भवन से उद्धार करो ,
मुझे अपनी शरण लो |

श्रीमद भागवत ४-२८-५७
(रक्षक=प्राण,

९ द्वार = २ आँखे, २ नाक छिद्र, २ कान १ मुंह, १ गुदा १ जनेन्द्रिय 3 खंड = त्रीगुण, सत-रज-तम ६ परिवार = मन, दृष्टि, स्वाद, गंध, शब्द, स्पर्श ५ बाजार= ५ कर्मेन्द्रियाँ ५ तत्व= क्षिति जल गगन पावक समीर
१ गृहस्वामिनी= भौतिक सुख)

जग की असत्यता

हे देव!
मनुष्य है वही उत्तम
जो समझ जाए
काल की परिस्थितियां
जो समझ जाए
भौतिक जग की असत्यता -दुर्नितियाँ
जो न्योछावर कर दे
अपना सर्वस्व उस अंतरात्मा पर
कर सम्पूर्ण विश्वास
धीर वही जो नही होता दुखित
कर कर निरंतर इश्वर
प्राप्ति के प्रयास
मुझे काल के समक्ष
सत्यता के ज्ञान का कर निवास।

श्रीमद भागवत
१.१३.२६-२७

मेरी भी रक्षा करें

हे परमात्मन !
ज्यूँ आत्मा रहित शरीर
यश और वैभव विहीन हो जाता है,
आपकी कृपा हटते ही मेरा भी
यश और व्यक्तित्व खो जायेगा,
अपनी कृपा बनाये रखें
गंगा स्वतः सागर में जा मिलती है
बिना किसी व्यवधान के,
मै भी आपके प्रेम में
आकर्षित रहूँ,
आप समस्त विश्व के उपदेशक हैं
आप परम धाम के स्वामी
आप गौ,ब्रह्म-ज्ञानियों, भक्तों के रक्षक
मेरी भी रक्षा करें ।

१.८.३९-४२
श्रीमद भागवत

मै आपके चरण -कमलों में शरण लेता हूँ

हे योगेश्वर !
आप ऐश्वर्य,
बैराग्य,
दिव्य-यश
ज्ञान, शौर्य, और सौन्दर्य से
ओत-प्रोत हैं,
मै आपके चरण -कमलों में शरण लेता हूँ,

आप सर्व-शक्तिमान एवं दिव्य हैं,
परम पुरुषार्थ,
पदार्थ और समय से युक्त हैं
त्रिगुण मयी ब्रह्माण्ड के पालक हैं,
प्रलय पश्चात प्रपंचों को
अपने में लीन करने वाले आप हैं,
समस्त जीवात्माओं के स्वामी आप हैं
मुझे अपने चरण कमलों में स्थान दें ।

श्रीमद भागवत
३.२४.३२-३८

मोह से छुटकारा दिलाएं

आत्मा तो
मन ,बुद्धि,मिथ्या अहंकार से
ढकी हुई
कहलाती यह सूक्ष्म शारीर
यह शरीर तब तक ही
अपने सकाम कर्मो से बंधा हुआ
और भौतिक शक्तियों से जड़ा हुआ
भोगना पड़ता है
जन्म-जन्मान्तर तक
भौतिक दशाओं को
भोगना पड़ता है विपर्ययों को
प्रभु आपके आदेशानुसार
आप इस भौतिक जगत के
मोह से छुटकारा दिलाएं ।

श्रीमद भागवत
(७.२.४७)

वाणी वही होती शुद्ध

वाणी वही होती शुद्ध
जो करे सदा हरि-नाम का वंदन
हाथ वही होते अनुकूल
जो उठे करने जनहित कार्य अभिनन्दन
मन वही है शांत
करे निरंतर स्मरण
जड़-चेतन में वासित श्री कृष्ण को
कर्ण-प्रिय है वही जो
उन्मुख पवित्र कथामृत श्रवण को
मस्तक उन्नत वही
जो नमित हो जड़ चेतन
इश्वर की अभिव्यक्ति में
चक्षु पवित्र वही
नित नित तरसें
प्रभु दरस की अनुरक्ति में,
अंग तो अंग तभी जो
प्राप्त करे नियमित रूप से
पवित्र श्री चरणों के जल को पखार कर
मनुष्य तो मनुष्य तभी जो
भूल सब पञ्च अवगुण
न्योछावर उस प्रभु निर्विकार पर
श्रीमद भागवत १०.८०.3-४ पर आधारित

दुखी संतप्त मन का मैल

हे नाथ !
भगवन चरण सेवा की
अभिरुचि है
मुझ दुखी संतप्त मन का मैल
प्रच्छालित कर
गंगा जल जैसे समस्त मलों को धो,
मन को शुद्ध करता है,
भगवत शरण में ले प्रभु,
अज्ञान-दूर कर
मानसिक चिंताओं को दूर कर
तीनो दैहिक-दैविक-अध्यात्मिक संतापों से
मुक्त कर ।

हे शांतिदूत !
मेरे मन की सुई तो मेरे आँगन में ही खोई है,
मै क्यूँ उसे बाहर ढूंढ रहा
अंतस में तो गहन अंध है,
मेरे अन्दर ब्रह्म ज्योत जलाएं प्रभु
मै अपने अन्दर की शान्ति
अपने अन्दर ही ढूँढना चाहता हूँ,
मोह, लोभ, अहंकार से जडित यह देह
अति कष्ट कारी है,

इस दुर्गुणों के वृक्ष को तो
जड़ से ही काटना होगा,
जल सिंचन से क्यूँ दूषित कर रहा हूँ,
प्रभु गुरु रूपी कटार दें,
इन बुराइयों को समूल नष्ट करना चाहता हूँ ।

श्रीमद भागवतम
४-२९-३१.३२

सकाम कर्म-यज्ञ

सकाम कर्म-यग्य करना होगा संपन्न
दान-तपस्या
ज्ञान-योग का मनन-अध्यन
मन-निग्रह, सन्यास ग्रहण, इन्द्रिय-दमन,
धर्म-कर्म-भक्ति का
समुचित हो निर्वहन।

आसक्ति-विरक्ति से
हो आत्म-साक्षात्कार
प्रबल वैराग्य भाव-जागृत,
मन हो योगाकर।

लौकिक जगत में हो योग-अध्यात्म निरुपित
प्रभु की अनन्य कृपा में यह जीवन समर्पित
पूर्ण ज्ञान का आह्वाहन,
प्राप्त श्रद्धा-स्थिरता
सम्पूर्ण विरक्त भक्ति
नाथ भजन में आसक्ति।

भौतिक संगति से हो दूर ध्यान
अहिंसा-सत्य का सदा रहे भान
कुविचार-चोरी आदि का न हो प्रवेश

उतना ही चाहूँ जितना भरण-विशेष
योग क्रियाओं का हो समावेश

रूढीवादी परम्पराओं से होऊं दूर ।

अनुरक्त होऊं मात्र शुद्ध भावनाओं में
चरम सिद्धि मिले जीवन-अस्तित्व में
मन-वचन-कर्म संतुलित रहें निज व्यक्तित्व में ।

(श्रीमद भागवत स्कंध-४ के २८ वें अध्याय से प्रभावित)

सत्य का अन्वेषण करो

ऋतुओं के शीतोष्ण चरित्र की तरह
दुःख सुख को भोगना ही पड़ेगा
इन्द्रिय तृप्ति से परे भगवन
आपसे श्रद्धा एवं प्रेम बनाये रखना चाहता हूँ
प्रभु स्वर्गिक सुख में भी जो प्राणी दुखी रहते हैं
उन्हें समझाओ
सत्य का अन्वेषण करो
तपस्या करनी है
आपकी भक्ति प्राप्ति के लिए

आपकी कथा का सदा श्रवन करूँ
आपकी भक्ति करूँ
अध्यात्मिक स्तर पर समभाव रहे
शत्रुता का त्याग हो
शोक का दमन हो
शास्त्रों का अध्यन हो
प्राणवायु केन्द्रित हो
ब्रहमचर्य व्रत का पालन हो
मन-कर्म-वचन से सत्यता का पालन हो
प्रभु अहंकार का नाश करें ।

श्रीमद भागवत ५.५.१०-१३

समस्त शास्त्रों का ज्ञान तू

हे परमेश्वर !
समस्त शास्त्रों का ज्ञान तू
यज्ञोपरांत की प्रसन्नता तू
योग का साक्षात्कार तू
सत्काम कर्म का परिणाम तू
परम ज्ञान का श्रम भी तू
प्रेम पूर्वक की गयी
सेवा मेरा धर्म हो
यह मेरा जीवन-लक्ष्य हो
ज्यूँ काष्ट मध्य अग्नि है विराजित
सर्व वस्तु मध्य विराजित तू
अद्वितीय तू
मेरे नाथ तू
मेरा तारण हार तू ।

श्रीमद भागवत महापुराण
(१.२.२९-33)

हे ! अकल्मष सुख के दाता

हे आत्म-प्रकाशित
परमात्मा !
मै आपको नमस्कार करता हूँ,
आप हृदय में साक्षी स्वरुप हैं,
आप प्रत्येक जीवात्मा को आलोकित करें,
आप तक मन वचन चेतना व् व्यायामों
द्वारा ही नही पहुंचा जा सकता है,
आप की अनुभूति दिलाने को प्रभु
मुझमे शुद्ध भक्ति का
दिव्य स्थिति में कर्म कराते हुए
संचारण करो,
हे ! अकल्मष सुख के दाता
हे दिव्य लोक के स्वामी,
मुझे स्वीकार करो
मै आपका नमन करता हूँ ।

हे अग्नि देव !

हे अग्नि देव !
वंदन
पास बुला,अपने प्रभाव से
दुष्टता बढाने वाले शत्रुओं को
समस्त बुराइयों का समूल नाश कर,

ज्ञान के पुंज
जठराग्नि के रूप में शारीरिक संतुलन बनाने वाले अग्नि देव
हमारे स्नेह से प्रसन्न होकर
आप दुष्ट-दुराचारियों का विनाश करें
दूसरों को पीड़ा पहुँचाने वाले
स्वार्थ सिद्ध करने वाले
समाज के शत्रुओं पर मुझे रुदन करने दें
हमें सत्कर्म की और प्रेरित करें,

हे ज्ञान स्वरुप अग्नि देव !
आपका प्रकाश रूपी पराक्रम हमें दिखाएँ,
हे पथभ्रष्टों के मार्ग दर्शक
दुष्टों को सन्मार्ग की और प्रेरित करें,
आप शुभ कार्य का प्रारम्भ कराएँ
आप हमारे प्रतिनिधि स्वरुप
दुष्ट जनों के दुष्कर्म पर उन्हें पराजित करें

दुराचारियों को भष्म होने पर बाध्य करें,
नदी जिस तरह झाग को बहा देती है
उसी तरह आपकी पवित्र ज्वाला
पापाचारियों को दूर ले जाए,
प्रायश्चित से आये को शरण दें
ज्ञान-पुंज से मार्ग दर्शन करें
सद्‌गुणों को वश में करें
सुदूर गुफा में भी अपना दिव्य प्रकाश पहुंचा कर
पथभ्रष्टों को सन्मार्ग दिखाएँ ।

(अर्थव वेद १-९-३०-४०)

शरीर रूपी वृक्ष

हे इश्वर !
इस शरीर रूपी वृक्ष
की जड तो आप हैं,
इस वृक्ष की जड़ों में
भक्ति-जल का
जितना सिंचन करूँ
उतनी ही तो
आत्म-सुख की
शाखाएं उतनी ही
तुष्ट होंगी,
मुझे आशीर्वाद दो
इस वृक्ष को
आजीवन सिंचित करता रहूँ ।

श्रीमद भागवत
८-५-४९

हे दिव्य लोक के स्वामी

हे परमात्मा !
नमन है तुझे,
आप हर हृदय में साक्षी-स्वरुप विराजित हैं,
प्रकाशित करते हैं आप प्रत्येक जीवात्मा को
उन जीवात्माओं को
जंहा मात्र मन-वचन-चेतना के
व्यायामों द्वारा ही पहुंचा जा सकता है
आप की अनुभूति तो
शुद्ध भक्ति का प्राप्य है
भक्ति योग की दिव्य शक्ति में
कर्म कर सकूँ
अकलुषित सुख को प्राप्त कर सकूँ
हे दिव्य लोक के स्वामी
पुनः पुनः नमस्कार |

श्रीमद भागवत
८.3.९०-९९

हे नाथ मन को नियंत्रित करो

हे नियंता इश्वर !
आप समस्त इन्द्रियों एवं
उत्पत्ति के नियंत्रक हैं
आपको श्रद्धेय नमस्कार
आप समस्त दैहिक-मानसिक-बौधिक
कर्मों के अधीश्वर हैं
आपको नमन
मन समेत ग्यारह इन्द्रियां
आपकी अभिव्यक्तियाँ हैं
आप समग्र आवश्यकता के पूरक हो
आप शक्तिस्वरूप अभिन्न हो
आप समस्त वेदों के ध्येय एवं उपासना हो
आपको सविनय नमस्कार
आप जन्म-जन्मान्तर तक कृपा बनाए रखें
प्रभु आपको कोटिशः नमन ।

श्रीमद भागवत
।।५.१८.१८।।

सप्त ताप

हे परमेश्वर!
काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह-अज्ञान-भय
इन सप्त ताप के
विग्रह का मूल कारण मन है
कर्म बंधन की पुष्टि करता है मन
मन अति चंचल है
मन अति अविश्वसनीय है
मन की चंचलता ही
सप्त ताप का
मुख्य कारण है
आपकी कृपा ही
इसका निवारण है ,
हे नाथ मन को नियंत्रित करो ।

श्रीमद भागवत
।।५.६.५।।

अध्यात्मिक संपत्ति

हे नाथ !
अध्यात्मिक संपत्ति से युक्त हूँ
द्वेत का संशय पूर्णतयः
छिन्न हो गया है
मैं अब अद्वेत प्रभु की शरण में हूँ
भौतिक प्रकृति के गुण-त्रय से मुक्त हो
अध्यात्म को प्राप्त करा,
जन्म-मृत्यु के पाश में क्यूँ फंसू,
मै तो भौतिक स्वरुप से मुक्त हो चूका हूँ ।

श्रीमद भागवत
९.१५.39

त्रिसप्त

हे वाच्स्पते !
सृष्टि में त्रिसप्त का बड़ा योग है
त्रिदेव, त्रिगुण, त्रिज्या, त्रिलोक,
त्रिआयाम का अनुपम संयोग है,
सप्त तो मनोहारी है,
सप्त सुरों से आच्छादित यह प्रकृति,
समाई है सप्त प्रकोष्ठ में.
प्रत्येक परमाणु का होता है
सप्त कोष्ठ,
हम प्राणी, जीव इस प्रकोष्ठ में
विचरते हैं,
त्रिसप्त का संयोग
धारण कर विश्व के रूप,
संव्याप्त –गतिशील हो
दे अति बलशाली स्वरुप,
आज हमें उनके
शरीरस्थ बल को प्रदान कर ।
(अर्थव वेद १/१/१)

स्थिर ज्ञान

हे वाच्स्पते !
आप दिव्य प्रकाशित ज्ञान
से युक्त होकर
सम्मुख आयें बारम्बार हमारे ।
प्रफुल्लित कर हमें
स्थिर ज्ञान प्रदान करे,
बुद्धि को प्रसार करे हमारे ।
धनुर प्रत्यंचा सा सशक्त तनाव
दैवी ज्ञान एवं धारण में प्राप्त हो,
मेधा-बुद्धि, वांछित साधन ,
दे हमें उपकृत करें ।
यह बुद्धि और वैभव
मुझमे स्थिर करें ।

अथर्व वेद १/१/२-3

ब्रह्म ज्ञान

हे ऋषिवर !
ब्रह्म ज्ञान से पूरित विद्या
का आह्वाहन करूँ मैं,
मेरे प्रत्येक अव्यय यज्ञ सामग्री,
स्कंध एवं मध्य अस्थिका का संधि वलय
समस्त वेद ऋचाएं हैं,
मेरे केश सामवेद
हृदय यजुर रूप,
ये वस्त्र यज्ञ हवि जान
मेरे अतिथि वृन्द ही मेरे
देवत्व संवर्धक यज्ञ हैं,
अतिथि अराधना कर मैं
यज्ञ दीक्षित हो
जल की कामना करता हूँ,
अतिथि को जल समर्पित कर मैं
यज्ञ को समर्पित करता हूँ मान ।
मुझे अतिथि सत्कार का
देवत्व प्रदान कर ।
अथर्व वेद ९/६/१-६

मेरे यज्ञ को पूर्ण करें,

हे इन्द्रदेव !
छोड़ अंतरिक्ष आप यहाँ आयें
अथाह बल से परिपूर्ण ,
सहस्त्रों पोषक तत्वों-रसों
से सज्जित हो
मेरे यज्ञ को पूर्ण करें,
ज्यूँ अन्न के साधक
भूमि पर कृषि करते हैं,
मैं बुद्धि, ज्ञान, बल का साधक
आपको सोमरस से सिंचित करता हूँ,
प्रजा की रक्षा हेतु
मैं दोनों हाथ फैलाये
आपका आह्वाहन करता हूँ ।

(सामवेद २/१२/१-५)

हमें वर्चस प्रदान करें

हे अग्नि देव !
आप रक्षक हो
जो करते आपकी अर्चना
आप हमारे शारीर का भी पालन करें,
आप हो आयुदाता
हमें दीर्घायु प्रदान करें
आप प्रदान करते हो
वैदिक अनुष्ठान से अर्जित तेज को,
हमें वर्चस प्रदान करें,
मेरे अंगों की अपूर्णता को पूर्ण कर
मुझे सर्वांग बनायें।
दीप्तिमान, धनसंपन्न, अहिंसक
कोई भी आपको ध्वस्त नहीं कर सकता
हे देव, कृपा को,
शक्तिमान बनूँ, आयुष्मान बनूँ,
मैं आपको प्रदीप्तकर
शतवर्ष तक जाज्वल्यमान रखूंगा,
हे रात्रिदेव।
सन्निकट ही विराजो,
हमारा कल्याण करो।

(यजुर्वेद 3/१७-१८)

मन की चंचलता

हे रूद्र देव !
मेरा यह चंचल मन
जागृतावस्था में तो
जाता है दूर बहुत दूर
नैनों की पहुँच से भी दूर,
यह तो है प्रकाशक देह
विज्ञानात्मा की संवाहक,
सुप्तावस्था में भी
पुनः चंचल मन होता है प्रवाहक,
दूरगामी मन
प्रकाशक स्रोत्र आदि इन्द्रियों
की प्रखंड ज्योति मन
कल्याण कारी हो,
संकल्प धारी हो ||

शुक्लयजुर्वेद (रुद्राष्टध्यायी १/५)

हे महादेव !
मेरा मन निश्चय ही
उत्पादक है ज्ञान का,
भलीभांति समर्थ है
सामान्य एवं विशेष भान का
यह
सत चित्त आनंद स्वरुप तो है ही
अविनाशी भी है
अतः
मेरे हृदय में
वर्तमान का ज्ञातव्य है
मन विहीन प्राणी तो
अकर्मण्य हो पर-जेतव्य है,
नाथ, कुछ ऐसा करो
कि मेरा मन
आज्ञाकारी हो
संकल्प धारी हो ||

शुक्लयजुर्वेद (रुद्राष्टध्यायी १/६)

हे जगदीश !
यह मन त्रिलोक में स्थिर
अविनाशी है,
सम्पूर्ण भुत भविष्य वर्तमान का ज्ञाता है
मैत्रावरुण द्वारा यज्ञ विस्तार किया जाता है,
जिस मन में
समस्त ऋचाओं सहित
ऋगवेद अवस्थित है,
संग स्थित है
साम एवं यजुर्वेद
स्वतः
उसी मन में
आप शब्द जाल को अवस्थित कर
कल्याणकारी करें
संकल्प धरी करें ||

शुक्लयजुर्वेद (रुद्राष्टध्यायी १/८-९)

हे आदित्य देव !
आपको
मैं सुधारस प्रदान करूँ
मुझे दीर्घायु बनायें आप,
सूर्यदेव आप प्रेरित हो वायु से
पोषण करे हमारा
रहे विराजमान सब प्रकार से
हमारे अंतस में,
जातवेदस देव
उर्ध्व ब्रह्म ज्योति में निरंतर
प्रवाह करते हुए
सर्वदा प्रभासित रहें
मैं परमात्मा से प्राथना करता हूँ ,
मुझे विद्वत्व प्रदान करे
ताकि
मैं आपकी उपासना करता रहूँ ||

शुक्ल यजुर्वेद ४/3

हे सूर्य देव !
सर्वाधिक बृहत्तर आकार आपका
अतः आपकी महत्ता है महान
त्रिलोक स्तुति करे
श्रेष्ठ आप श्रेष्ठ ज्ञान ,
सत्य है
धन एवं अन्न सब आप हो,
असुर विनाशक आप हो,
देव शासक आप हो,
प्रथम पूज्य आप हो,
कैसे करे कोई आपका
प्रचंड तेज ,
हे प्रभासित देव,
रक्षितं रक्षितं
सुर्यप्रभा अरुणोदय की
पाप हरे, अपयश हरे कष्ट हरे ।

शुक्ल यजुर्वेद ४/१५-१७

हे परमात्मा !
मन,दृष्टि बहुत चल है,
बुद्धि अति कुठार है,
दूर कर इसे
ऋचा बनें वाणी
मन हो यजुः सम
साम तो प्राण हैं
चक्षु, कर्ण इन्द्रियां
आपकी शरणागत हो चुकी,
मन को बलशाली बना
और बना साथ तन को
उच्छ्वास नि:स्वास वायु
पूर्ण रूपेण स्थिर रहें,
भुवन स्वामी आप
मुझ में स्थित रहें ||

शुक्ल यजुर्वेद ९/१-२